The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com

स्नातक स्तर पर आध्यात्मिक बुद्धि और व्यक्तित्व का अध्ययन

मनोज कुमार गुप्ता
शोध-छात्र
शिक्षाशास्त्र विभाग
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)- 273009

प्रो. शोभा गौड़
अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता
शिक्षाशास्त्र विभाग
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)- 273009

सारांश–

किसी भी राष्ट्र या समाज के विकास में मानव संसाधन का योगदान सर्वोपरि होता है। यदि किसी देश का मानव संसाधन उत्तम है तो अवश्य ही वह देश सफलता के शिखर को छू लेता है। यह बात सर्वविदित है कि मानव संसाधन के विकास में मानव के व्यकित्व की अहम भूमिका होती है। व्यकित्व ही वह कारक है जो किसी भी व्यक्ति के चरित्र एवं महत्वाकांक्षा स्तर को निर्धारित करता है। यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि व्यक्तित्व व्यक्ति के आध्यात्मिक और भौतिक दोनों पक्षों से प्रभावित होता है। व्यक्तित्त्व का आध्यात्मिक पक्ष आध्यात्मिक बुद्धि का ही एक व्यापक रूप होता है। साथ ही व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकारों जैसे अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी और उभयमुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों/छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि भी अलग-अलग होती है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों/छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना है। शोध के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी और उभयमुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों और छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर है। इस प्रकार वर्तमान अध्ययन के द्वारा यह बात सिद्ध होती है कि यदि शुरू से ही छात्र/छात्राओं के व्यक्तिव और आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन कर उसे सही दिशा दिया जाये तो अवश्य ही सुसंस्कृत, मानवीय गुणों से ओत-प्रोत एवं आदर्श नागरिकों का निर्माण संभव है।

बीज शब्द– *(1) आध्यात्मिक बुद्धि (2) व्यक्तित्व (3) ग्रामीण (4) शहरी (5) अन्तर्मुखी (6) बहिर्मुखी (7) उभयमुखी*

प्रस्तावना

शिक्षा और समाज का शुरू से ही घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। दोनों को एक दूसरे का पूरक माना जाता है। शिक्षा किसी भी समाज में रहने वाले व्यक्तियों के सर्वांगीण का मार्ग प्रशस्त करती है। यह व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व दोनों को ही निखारने का कार्य करती है। यह मानव के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही पक्षों को विकसित करती है। यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि किसी व्यक्ति के विकास में उसके व्यक्तित्व का सर्वाधिक योगदान होता है। किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व ही वह कारक होता है जो उसे समाज उन्मुखी और गतिशील बनाता है। सामान्यतया प्रत्येक मनुष्य का व्यकित्व अलग-अलग होता है और यह अपने में अद्वितीय होता है। यही कारण संसार का प्रत्येक दूसरे मनुष्यों किसी न किसी बात में भिन्न अवश्य होता है। यहाँ तक कि एक ही माता-पिता की जुड़वाँ संतानें भी पूरी तरह से एक समान नहीं होती हैं अपितु उनमें कुछ न कुछ भिन्नता अवश्य होती है। चाहे वह भिन्नता मानसिक हो, बौद्धिक हो , शारीरिक हो या अन्य कोई। परन्तु भिन्नता होती अवश्य है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति का व्यक्तिव उसकी मानसिक क्षमता , बुद्धि , शारीरिक क्षमता , सामाजिक वातावरण , इत्यादि से प्रभावित होता है। सामान्यत: मानसिक क्षमता और बुद्धि सम्मिलित रूप से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं ।बुद्धि को भी वर्तमान समय में अनेक सन्दर्भों में वर्णित किया जाता है जैसे सामान्य बुद्धि , बिशिष्ट बुद्धि, सामाजिक बुद्धि , संवेगात्मक बुद्धि , आध्यात्मिक बुद्धि। बुद्धि के इन सभी प्रकारों का प्रभाव किसी व्यक्ति के व्यक्तिव पर किसी न किसी रूप में अवश्य पड़ता है। यह बात अलग है कि इनके प्रभावगत मात्रा में कुछ भिन्नता अवश्य हो सकती है। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि बुद्धि के इन सभी प्रकारों में आध्यात्मिक बुद्धि की संकल्पना अपेक्षाकृत अधिक नवीन है। अतः शोधकर्ताओं के मन में यह जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि आध्यात्मिक बुद्धि किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को किस रूप में प्रभावित करती है , क्या महिलाओं और पुरुषों के आध्यात्मिक बुद्धि तथा व्यक्तिव में कुछ अंतर होता है अथवा नहीं , क्या निवास स्थान के आधार पर आध्यात्मिक बुद्धि और व्यक्तिव में भिन्नता है अथवा नहीं। प्रस्तुत शोध अध्ययन इसी जिज्ञासा का उत्तर खोजने का एक प्रयास है।

आध्यात्मिक बुद्धि

मनोवैज्ञानिकों ने मनुष्य की बुद्धि के अनेक प्रकार बतायें हैं जैसे सामान्य बुद्धि, विशिष्ट बुद्धि, सामाजिक बुद्धि , संवेगात्मक बुद्धि आदि। बुद्धि की ये सभी संकल्पनाएँ अपेक्षाकृत पुरानी और इन सभी पर बहुत-सा शोध कार्य भी किया जा चुका है। परन्तु वर्तमान समय में बुद्धि की एक नई संकल्पना अपना विस्तार कर रही है जिसे सामान्यत: आध्यात्मिक

बुद्धि के रूप में जाना जाता है। अब प्रश्न उठता है कि आध्यात्मिक बुद्धि किसे कहते हैं, इसे मापने के तरीके कौन-कौन से हैं , इसका स्वरूप क्या है, इसके आयाम क्या-क्या हैं आदि। सामान्य रूप में आध्यात्मिक बुद्धि से अर्थ मनुष्य की आंतरिक भावनाओं और विचारों से लिया जाता है। यह मनुष्य की मानवीय संवेदनाओं का परिचायक होता है तथा प्राणीमात्र के प्रति करुणा दिखता है। यह दया, करुणा, सदाचार, निष्ठां, अपनापन, नैतिकता इत्यादि का द्योतक होता है। आध्यात्मिक बुद्धि से युक्त मनुष्य दूसरों का सहयोग करने वाला होता है। ऐसा मनुष्य अपना कार्य व्यवस्थित तरीके से करता है एवं दूसरों को भी अपने कार्यों को सही तरीके से करने के लिए कहता है। आध्यात्मिक गुणों वाला मानव अनुशासित जीवन जीता है एवं किसी भी परिस्थिति में अपने को ढाल लेता है। आध्यात्मिकता किसी धार्मिक अंधविश्वास का समर्थन नहीं करती अपितु यह सर्व धर्म समभाव की प्रेरणा देती है।

'आध्यात्मिक बुद्धि' शब्द का सबसे पहले प्रयोग डोनाह जोहर के द्वारा अपनी पुस्तक '**ReWiring the Corporate Brain**' में 1997 में किया गया था। ठीक उसी वर्ष अर्थात 1997 में ही केन ओ डोनेल ने भी व्यक्ति के भावनात्मक और आध्यात्मिक आयाम में 'आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता' शब्द का प्रयोग किया।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व एक बहुआयामी संकल्पना है। सामान्य लोग किसी व्यक्ति के बाहरी आकर एवं बनावट को ही व्यक्तित्व मानते हैं जो भ्रमपूर्ण है। व्यक्तित्व मनुष्य के बाहरी एवं आंतरिक संगठनों का एक मिलाजुला रूप होता है। व्यतित्व को अंग्रेज़ी में पर्सनैलिटी कहते हैं जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'परसोना' शब्द से हुयी है जिसका अर्थ होता है-'मास्क'। इस प्रकार व्यक्तित्व को एक बाहरी मुखौटा माना जाता है। प्राचीन समय में नाटक के कुछ पात्र अपने चहरे या पूरे शरीर पर एक विशेष प्रकार का आवरण लगा लेते थे जिससे इनका चेहरा एक विशेष व्यक्तित्व वाले व्यक्ति के समान दिखने लगता था। यह कार्य अभिनय हेतु किया जाता था जो कृत्रिम होता था। परन्तु वर्तमान समय में व्यक्तित्व को एक विशेष अर्थ में देखा जाता है। यह केवल मनुष्य के बाहरी स्वरूप को ही नहीं दिखता है वरन उसके हाव-भाव , व्यवहार , कार्य करने के तरीके, इच्छा-शक्ति , संगठनात्मक क्षमता इत्यादि को भी प्रदर्शित करता है। यह हो सकता है कि कोई व्यक्ति देखने में शरीर से बहुत दुर्बल एवं कुरूप हो परन्तु उसकी इच्छा-शक्ति एवं संगठनात्मक क्षमता दृढ़ हो। इसी प्रकार यह भी हो सकता है कि कोई व्यक्ति शरीर से देखने में बहुत मजबूत एवं सुन्दर तथा आकर्षक हो परन्तु उसका आंतरिक व्यक्तित्व बहुत कमजोर हो।

व्यक्तित्व के क्षेत्र में वर्ष 1937 को एक निर्णायक मोड़ माना जाता है जब आलपोर्ट ने **'Personality : a psychological interpretation'** प्रकाशित किया। इसी प्रकार स्टैगनर का 'व्यक्तित्व का मनोविज्ञान' इस क्षेत्र में विशेष योगदान देता है। व्यक्तित्व के विकास में विलियम जेम्स (**principle of psychology** , 1890), सिगमंड फ्रायड (दी इंटरप्रीटेसंश ऑफ़ ड्रीम्स, 1900) इत्यादि के योगदान को भी भुलाया नहीं जा सकता है। व्यक्तित्व की संकल्पना हमें इस कार्य में सहायता करती है कि कैसे किसी व्यक्ति के व्यवहार की व्याख्या की जाय, वर्णन किया जाये और उसे समझा जाय। इस विश्व में कोई भी दो व्यक्तियों का व्यक्तित्व पूरी तरह से एक समान नहीं होता है। उनमें कुछ-न-कुछ भिन्नता अवश्य होती है। प्रत्येक व्यक्ति का एक अनुपम व्यक्तित्व होता है। अत: शिक्षा के द्वारा इस बात का प्रयास करना चाहिए कि व्यक्तियों को उनकी वैयक्तिक भिन्नता के अनुसार शिक्षा दी जाय और उसी के अनुसार उनका पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधि , इत्यादि होनी चाहिए। इसका परिणाम यह होगा कि छात्रों का विकास स्वाभाविक रूप में होगा और उन पर अनावश्यक दबाव भी नहीं पड़ेगा। फलस्वरूप उनके व्यक्तिव का विकास उचित दिशा में होगा

व्यक्तियों में पाई जाने वाली भिन्नता को दो आधारों पर वर्णित किया जाता है-

(1) अंत:वैयक्तिक भिन्नता

(2) अंतर्वैयक्तिक भिन्नता

एक ही व्यक्ति के विभिन्न शारीरिक गुणों में पायी जाने वाली भिन्नता को अंत:वैयक्तिक भिन्नता कहा जाता है जैसे किसी व्यक्ति के भार**,** लम्बाई एवं बुद्धिलब्धि में भिन्नता होना। यह हो सकता है कि एक व्यक्ति शारीरिक रूप से बहुत शक्तिशाली हो, मानसिक रूप से कमजोर अथवा इसका विपरीत भी हो सकता है। युंग ने व्यक्तित्व को अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी दो प्रकार में विभाजित किया। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले लोग आदर्शवादी एवं आत्मकेंद्रित होते हैं तथा इन्हें अकेलापन पसंद होता है। इसके ठीक विपरीत बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले लोग व्यावहारिक एवं सामाजिक होते हैं। परन्तु आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने इन दोनों प्रकारों की आलोचना करते हुए उभयमुखी व्यक्तित्व की संकल्पना को प्रस्तुत किया जिसमें अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी दोनों ही प्रकार के व्यक्तित्व के गुण पाये जाते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में शोधकर्ताओं द्वारा यह अनुभव महसूस किया गया कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र/छात्राओं के व्यक्तित्व का अध्ययन किया जाये ताकि इसके आधार पर एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचा जाये तथा उनके व्यक्तित्व के उचित विकास के लिए प्रयास किया जाये।

सम्बन्धित-साहित्य का सर्वेक्षण

वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित अनेक प्रकार के पूर्व में किये गये अध्ययनों एवं साहित्य का सर्वेक्षण किया गया जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं..

धेंवल, सुनीता (2021) ने 300 लोगों पर अध्ययन किया और पाया कि पुरुषों का व्यक्तित्व महिलाओं के व्यक्तित्व की अपेक्षा अधिक अन्तर्मुखी था जबकि महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा उभयमुखी अधिक थीं। साथ ही व्यक्तित्व संज्ञानात्मक योग्यता से सकारात्मक रूप से सम्बन्धित था। जायसवाल, सुधा (2018) ने अपने अध्ययनों के आधार पर यह बताया कि वैयक्तिक विशेषताएँ शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक रूप से सम्बन्धित होती है। परवीन, फरजाना (2018) ने अपने अध्ययनों में यह पाया कि आध्यात्मिकता मनोवैज्ञानिक स्वस्थता से सार्थक रूप से सम्बन्धित है। अग्रवाल, नैंसी (2017) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि नर्सों की कार्य-संतुष्टि और आध्यात्मिक बुद्धि में घनिष्ठ सम्बन्ध है। पाण्डेय, मोहिनी (2015) ने अपने अध्ययन में पाया कि अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाले वयस्कों के मध्य उनके निवास-स्थान, लिंग और शैक्षिक वर्ग के आधार पर सार्थक अंतर था जबकि बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले वयस्कों के मध्य लिंग के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं प्राप्त हुआ। अंजुम, शबाना (2014) ने अपने अध्ययन के द्वारा यह ज्ञात किया कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि का स्तर अपेक्षाकृत कम था जबकि उच्च आध्यात्मिक बुद्धि वाले छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले छात्रों की अपेक्षा अच्छा था। जायसवाल, निधि (2012) ने संस्थागत और गैर-संस्थागत वयस्कों के मध्य उनके स्वास्थ्य की तुलना आध्यात्मिक बुद्धि से की और उनमें सार्थक सम्बन्ध पाया।

समस्या-कथन

साहित्य के उपर्युक्त अध्ययनों के आधार पर अनुसंधानकर्ताओं को स्नातक स्तर पर आध्यात्मिक बुद्धि एवं व्यक्तित्व से सम्बन्धित अध्ययन की कमी महसूस हुई। अतः वर्तमान अध्ययन का समस्या-कथन इस प्रकार प्रस्तुत किया गया...

'स्नातक-स्तर पर आध्यात्मिक बुद्धि और व्यक्तित्व का अध्ययन'

अध्ययन के उद्देश्य

1) स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र/छात्राओं के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।

2) स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन करना।

3) स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।

4) स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।

5) स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले ग्रामीण छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।

6) स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले शहरी छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।

7) स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाली ग्रामीण छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।

8) स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाली शहरी छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1) स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

2) स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

3) स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले ग्रामीण छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

4) स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले शहरी छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

5) स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाली ग्रामीण छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

6) स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी**,** बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाली शहरी छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमन

- प्रस्तुत अध्ययन केवल गोरखपुर जनपद में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं तक सीमित है।
- स्नातक स्तर के अंतर्गत केवल बी.ए. , बी.एस-सी. एवं बी.कॉम. के छात्रों और छात्राओं को ही अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक विधि के अंतर्गत आने वाली सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध के लिए ऐसे समस्त छात्रों और छात्राओं ने जनसंख्यां का निर्माण किया जो दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से सम्बद्ध एवं गोरखपुर जनपद में स्थित महाविद्यालयों में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत थे।

प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध के लिए प्रतिदर्श के रूप में 300 स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया।

शोध के उपकरण

प्रस्तुत शोध में आकड़ों को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित शोध-उपकरणों का प्रयोग किया गया

- **आध्यात्मिक बुद्धि मापनी (SIS)-** इस मापनी का निर्माण डॉ. के. एस. मिश्रा द्वारा किया गया। इस मापनी में आध्यात्मिक बुद्धि से सम्बन्धित कुल 42 कथन हैं। कथनों के लिए अनुक्रिया के रूप में लिकर्ट प्रकार के पांच-बिंदु मापनी पूर्णत: सहमत, सहमत**,** अनिश्चित**,** असहमत और पूर्णत: असहमत का प्रयोग किया गया जिनके लिए क्रमशः 5**,** 4**,** 3**,** 2 और 1 अंक निर्धारित है।

- **अन्तर्मुखी-बहिर्मुखी अनुसूची (IEI)-** व्यक्तित्व के मापन के लिए डॉ. पी. एफ. अजीज और डॉ. रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित अन्तर्मुखी-बहिर्मुखी अनुसूची का प्रयोग किया गया। इस अनुसूची में कुल 60 कथन हैं जिनमें से 30 कथन अन्तर्मुखी और 30 कथन बहिर्मुखी व्यक्तित्व से सम्बन्धित हैं। प्रत्येक कथन के दो अनुक्रिया विकल्प -हाँ और नहीं दिये गये हैं जिनमें से किसी एक विकल्प का चयन करना है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या: 1

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन

समूह	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	67669.33	33834.67	177.48	.05=3.07 .01=4.78
समूहों के अंदर	147	28024	190.64		
कुल	149	95693.33	642.24		

सारणी संख्या 1 के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में अंतर हेतु परिगणित **F** अनुपात का प्राप्त मान 177.48 के **df** (2, 147) पर .01 सार्थकता स्तर के सार्थकता मान 4.78 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना संख्या (1) को अस्वीकार किया गया और यह निष्कर्ष निकाला गया कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर है।

सारणी संख्या: 2

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन

समूह	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	41249.33	20624.67	277.62	.05=3.07 .01=4.78
समूहों के अंदर	147	10920	74.29		
कुल	149	52169.33	350.13		

सारणी संख्या 2 के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में अंतर हेतु परिगणित **F** अनुपात का प्राप्त मान 277.62 के **df** (2, 147) पर .01 सार्थकता स्तर के सार्थकता मान 4.78 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना संख्या (2) को अस्वीकार किया गया और यह निष्कर्ष निकाला गया कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर है।

सारणी संख्या: 3

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले ग्रामीण छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन

समूह	**df**	**SS**	**MS**	**F**	सारणी मान
समूहों के मध्य	**2**	**31824.67**	**15912.33**	**158.68**	**.05=3.13**
समूहों के अंदर	**72**	**7220**	**100.28**		**.01=4.92**
कुल	**74**	**39044.67**	**527.63**		

सारणी संख्या 3 के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले ग्रामीण छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में अंतर हेतु परिगणित **F** अनुपात का प्राप्त मान 158.68 के **df** (2, 72) पर .01 सार्थकता स्तर के सार्थकता मान 4.92 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना संख्या (3) को अस्वीकार किया गया और यह निष्कर्ष निकाला गया कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले ग्रामीण छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर है।

सारणी संख्या: 4

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले शहरी छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन

समूह	**df**	**SS**	**MS**	**F**	सारणी मान
समूहों के मध्य	**2**	**35952.67**	**17976.33**	**107.57**	**.05=3.13**
समूहों के अंदर	**72**	**12032**	**167.11**		**.01=4.92**
कुल	**74**	**47984.67**	**648.44**		

सारणी संख्या 4 के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले शहरी छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में अंतर हेतु परिगणित **F** अनुपात का प्राप्त मान 107.57 के **df** (2, 72) पर .01 सार्थकता स्तर के सार्थकता मान 4.92 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना संख्या (4) को अस्वीकार किया गया और यह निष्कर्ष निकाला गया कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले शहरी छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर है।

सारणी संख्या: 5

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाली ग्रामीण छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन

समूह	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	14794.67	7397.33	131.76	.05=3.13
समूहों के अंदर	72	4042	56.14		.01=4.92
कुल	74	18836.67	254.55		

सारणी संख्या 5 के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाली ग्रामीण छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में अंतर हेतु परिगणित **F** अनुपात का प्राप्त मान 131.76 के **df** (2, 72) पर .01 सार्थकता स्तर के सार्थकता मान 4.92 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना संख्या (5) को अस्वीकार किया गया और यह निष्कर्ष निकाला गया कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाली ग्रामीण छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर है।

सारणी संख्या: 6

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाली शहरी छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन

समूह	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	27432	13716	438.912	.05=3.13
समूहों के अंदर	72	2250	31.25		.01=4.92
कुल	74	29682	401.11		

सारणी संख्या 6 के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाली शहरी छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में अंतर हेतु परिगणित **F** अनुपात का प्राप्त मान 438.912 के **df** (2, 72) पर .01 सार्थकता स्तर के सार्थकता मान 4.92 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना संख्या (6) को अस्वीकार किया गया और यह निष्कर्ष निकाला गया कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाली शहरी छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक अंतर है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र/छात्राओं के व्यक्तित्व के सन्दर्भ में उनकी आध्य्यात्मिक बुद्धि में भिन्नता पायी जाती है। अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व वाले छात्रों एवं छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता पायी गयी। साथ ही यह भिन्नता उनके निवास-स्थान जैसे ग्रामीण एवं शहरी के सन्दर्भ में भी स्पष्ट रूप से प्रकट हुयी। इस प्रकार की भिन्नता के आधार पर विभिन्न प्रकार के

व्यक्तित्व वाले छात्रों की पहचान कर उनके आध्यात्मिक बुद्धि के स्तर को जाना जा सकता है तथा उनमें सुधार करने के लिए आवश्यक कदम भी उठाए जा सकते हैं।

वर्तमान अध्ययन केवल स्नातक स्तर तक सीमित है। यह अध्ययन व्यापक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के अन्य स्तरों जैसे स्नातकोत्तर, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, प्राथमिक आदि पर भी किया जा सकता है। इसी प्रकार का अध्ययन तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में किया जाना उपयोगी सिद्ध होगा। साथ ही विभिन्न प्रकार के चरों जैसे मानसिक स्वाथ्य, समायोजन, आकांक्षा-स्तर, अभिरुचि इत्यादि के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार के अध्ययन को किया जाना उचित होगा।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

- सिंह, ए.के. (2015). शिक्षा मनोविज्ञान. पटना: भारती भवन.
- सिंह, ए.के. (2015). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ. पटना: मोतीलाल बनारसीदास.
- गुप्ता, एस.पी. (2015). अनुसन्धान संदर्शिका. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन.
- शर्मा, आर.ए. (2014). शिक्षा अनुसन्धान. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो.
- सारस्वत, एम. (2012). शिक्षा मनोविज्ञान की रुपरेखा. लखनऊ: आलोक प्रकाशन.
- पाठक, पी.डी. (2011). शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
- गुप्ता, एस.पी. (2009). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन.
- कपिल, एच.के. (2000). सांख्यिकी के मूल तत्व. आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर.
- राय, पी.एन. (1999). अनुसन्धान परिचय. आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
- Best, John W. (1977); Research in Education, Second Indian Reprint, New Delhi : Prantice Hall of India Pvt. Ltd.
- Best, John W. and James V. Kahn (2007); Research in Education, Ninth Edition, New Delhi: Pearson Prantice-Hall.
- Bhatnagar, Suresh and others (2016) ; Childhood and Growing Up, First Edition, Meerut: R. Lall Book Depot.
- Canales, Bladimir Bacerra and Domizbeth Bacerra Human (2020) ; Design and Validation of the Spiritual Intelligence Scale in Health Practice, Ica-Peru : Enfermeria Global .

- Gupta, S.P. (2015) ; Research Introductory, Allahabad : Sharda Pustak Bhawan.
- Gupta, S.P. and Alaka Gupta (2009) ; Educational Measurement and Evaluation, Revised Edition, Allahabad : Sharda Pustak Bhawan .
- Kothari, C.R. (2009) ; Research Methodology-Methods and Techniques, Second Revised Edition, New Delhi: New Age International Pvt. Ltd.
- Lal, Raman Bihari and Ram Niwas Manav (2011) ; Educational Psychology, Meerut: Rastogi Publications .
- Lal, Raman Bihari and Suresh Chandra Joshi (2011) ; Educational Measurement , Evaluation and Statistics , Meerut : Rastogi Publications.
- Mangal, S.K. (2014) ; Educational Psychology , Delhi : P.H.I. Learning Pvt. Ltd.
- Srivastava , D.N. and V.N. Srivastava ; Anusadhan Vidhiyan , New Revised Edition , Agra : Sahitya Publication.
- Singh , Arun Kumar (2017) ; Research Methods in Psychology, Sociology and Education , Revised Edition , Delhi : Moti Lal Banarasi Das .
- Singh, Arun Kumar (2015) ; Educational Psychology , Patna : Bharati Bhawan, P & D.
- Sharma, R.A. ; Fundamentals of Educational Research & Statistics , Meerut : R. Lall Book Depot

Source related to Internet

- https://sqi.co/definition-of-spiritual-intelligence
- https://soul-metrics.com/spiritual-intelligence
- https://www.researchgate.net/publication/321875385
- https://spiritualexperience.eu/spiritual-intelligence
- https://en.wikipedia.org/wiki/spiritual_-intelligence

- https://m.timesofindia.com/what-is-spiritual-intelligence/articleshow/5343214.cms

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2023/37
Impact Factor (IIJIF-1.561)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

मनोज कुमार गुप्ता एवं प्रो. शोभा गौड़

for publication of research paper title

स्नातक स्तर पर आध्यात्मिक बुद्धि और व्यक्तित्व का अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-02, Month July, Year-2023.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY